उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय तीन:

पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें..... 3

नोट्स 4

I. **परिचय** (0:19) 4

II. **मूल अर्थ** (2:00) 4

III. **धर्मवैज्ञानिक आधार** (6:42) 5
- क. लेखक (7:10) 5
- ख. श्रोता (13:25) 5
- ग. दस्तावेज (21:43) 6
  1. जैविक प्रेरणा (23:12) 6
  2. दिव्य समायोजन (29:08) 7

IV. **महत्व** (33:58) 8
- क. कलीसियाई इतिहास (34:08) 8
- ख. आधुनिक कलीसिया (41:44) 8

V. **सारांश** (45:35) 9

पुनर्विचार हेतु प्रश्न..... 10

लागू करने हेतु प्रश्न..... 13

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
    - **स्वयं को तैयार करें** – किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
    - **देखने के लिए समय निर्धारित करें** – इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
    - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें** – जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
    - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
    - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें** – पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
    - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें** – उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:19)

II. मूल अर्थ (2:00)

वे अवधारणाएँ, व्यवहार और भावनाएँ जिन्हें दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से अपने पहले श्रोताओं को सम्प्रेषित करने के लिए दिए गए दस्तावेज़ में इच्छित किया।

मूल अर्थ के तीन मुख्य सरोकार:

- दस्तावेज : यह वास्तव में परमेश्वर का वचन है जिसे प्रथम श्रोताओं को भेजा गया था।

- लेखक : जैविक प्रेरणा की प्रक्रिया के माध्यम से, दस्तावेज लेखक के विचारों, अभिप्रायों, भावनाओं, साहित्यिक कौशल और ऐसी ही और बातों को दर्शाता है।

- श्रोता : दोनों अर्थात् पवित्र आत्मा और मानवीय लेखकों ने दस्तावेज को इस तरह से निर्मित किया कि उनके स्वयं के संदर्भ और परिस्थितियों में विशेष रूप से बोले।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

III. धर्मवैज्ञानिक आधार (6:42)

क. लेखक (7:10)

पवित्र आत्मा ने बाइबल के मानवीय लेखकों के माध्यम से अपने शब्दों को सम्प्रेषित करने के लिए चुना।

मानवीय लेखकों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करना हमें पवित्रशास्त्र के कई गुणों को समझने में सहायता करता है।

ख. श्रोता (13:25)

दिव्य समायोजन : का विचार यह है कि परमेश्वर ने उसके प्रकाशन को प्रथम श्रोता को समझने के लिए रूपरेखित किया।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

सार्वभौमिक समायोजन सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में सबसे ज्यादा नाटकीय रूप में मानवीकरण में मिलता है।

परमेश्वर ने उसके प्रकाशन को विशेष व्यक्तियों को समायोजित करने के लिए भी किया जिनसे उसने बात की

ग. दस्तावेज (21:43)

1. जैविक प्रेरणा (23:12)

परिभाषा: पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र को लिखने के लिए मानवीय लेखकों को प्रेरित किया।

केवल पवित्रशास्त्र के मूल पाठ को ही परमेश्वर की ओर से पूर्ण अधिकार दिया गया है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पवित्रशास्त्र के दस्तावेजों की प्रतियों और अनुवादों के प्रति की गई आपत्तियों के प्रति प्रतिउत्तर :

- यीशु के दिनों में पुराने नियम के मूल दस्तावेज विद्यमान नहीं थे। यीशु और उसके प्रेरितों ने अभी भी यही विश्वास किया कि पवित्रशास्त्र जो उनके पास उपलब्ध था वह विश्वनीय था।

- कई दशकों तक पवित्रशास्त्र की प्राचीन प्रतियों की तुलना और अध्ययन के लिए समर्पित विद्वानों के अनुसन्धान का आज उपलब्ध है।

2. दिव्य समायोजन (29:08)

परिभाषा : इसमें पवित्रशास्त्र के शब्द, व्याकरण और साहित्यिक शैली जैसी बातें सम्मिलित हैं जो अपने दिन की सांस्कृतिक और भाषाई स्वीकृत मानकों के अनुरूप उठी हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

IV. महत्व (33:58)

क. कलीसियाई इतिहास (34:08)

अभी तक के पूरे इतिहास में, धर्मशास्त्रियों ने आग्रह किया है कि पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ की खोज करना बाइबल की व्याख्या का एक अनिवार्य हिस्सा है।

प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार के मध्य, विद्वानों ने पवित्र शास्त्र की जाँच-पड़ताल को उसकी मूल भाषा और ऐतिहासिक संदर्भों में करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

ख. आधुनिक कलीसिया (41:44)

20वीं सदी के आरम्भ में, साहित्यिक आलोचना की आधुनिक विचारधाराओं ने मूल अर्थ की उपेक्षा करनी आरम्भ कर दी।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

20वीं सदी के मध्य में, कई व्याख्याकारों ने पुरातन ग्रंथकारों और श्रोताओं की पहचान को अनदेखा कर दिया और पूरी तरह से अपने ध्यान को मूलपाठ के ऊपर केन्द्रित किया।

व्याख्या के अत्याचार से बचने का केवल एक ही तरीका बाइबल को उस ऐतिहासिक संदर्भ में देखने से है।

V. सारांश (45:35)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. मूल अर्थ क्या है?

2. पवित्रशास्त्र के अर्थ के लिए हमारी खोज में बाइबल के लेखकों के धर्मवैज्ञानिक आधार के ऊपर ध्यान देना क्या है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

3. पवित्रशास्त्र की जाँच पड़ताल की प्रक्रिया के लिए बाइबल के मूल श्रोताओं का अध्ययन करना क्यों आवश्यक है?

4. बाइबल के दस्तावेजों के मूल अर्थ को समझने के लिए किस तरह से जैविक प्रेरणा और दिव्य समायोजन हमारी सहायता करता है?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

5. कलीसियाई इतिहास में पवित्रशास्त्र की उचित जाँच पड़ताल के लिए पाए जाने वाले कुछ मुख्य उदाहरणों का विवरण दें?

6. आधुनिक कलीसिया के लिए कुछ ऐसी चुनौतियाँ कौन सी हैं जिसने मूल अर्थ की महत्वपूर्णता को मूल्यहीन आँका है?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. बाइबल के किसी एक संदर्भ के मूल अर्थ की खोज किस तरह से हमारे शिक्षण और प्रचार में हमारी सहायता करती है?

2. किस तरह से बाइबल के लेखकों के ऊपर ध्यान देना आपके उस तरीके को प्रभावित करता है जिस में आप बाइबल का पठन् करते हैं?

3. बाइबल के संदर्भों के मूल अर्थ को आत्मसात् करने के लिए कौन से कुछ तरीकों को आप उपयोग करते हैं?

4. विश्वसनीयता की किस मात्रा को आप इस बात की जानकारी से पाते हैं कि आज के विद्वानों की पहुँच उन पाण्डुलिपियों तक है जिनमें पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ पाये जाते हैं ?

5. वे कौन से ऐसे कुछ विशेष तरीके हैं जिन्हें आप आपकी वर्तमान की परिस्थितियों में जैविक प्रेरणा के प्रति आपकी विश्वसनीयता में प्रदर्शित कर सकते हैं?

6. किस तरह से दिव्य समायोजन उस तरीके को प्रभावित करता है जिसमें आप बाइबल की व्याख्या आपकी सांस्कृतिक परिस्थितियों में करते हैं ?

7. मूल अर्थ के लिए पवित्रशास्त्र की जाँच पड़ताल के लिए आरम्भिक कलीसिया के ध्यानाकर्षण से आप किस तरह के उत्साह को पाते हैं?

8. आपने किस तरह से देखा कि आधुनिक साहित्यिक आलोचनाएं उस तरीके के ऊपर प्रभाव डालती है जिसमें आप आज बाइबल की व्याख्या करते हैं ?

9. आपकी समकालीन सेवकाइयों जिसमें आप कार्यरत् हैं के मध्य आप किस तरह बाइबल के मूल अर्थ का उपयोग कर रहे हैं?

10. इस अध्याय से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org